रिकार्डः- तू प्यार का सागर है।   ओमशान्ति   प्रातः क्लास   31-12-67

ओमशान्ति। मीठे बच्चों ने गीत सुना। अर्थ भी समझते हैं हमको भी प्यार का सागर बनना है। आत्माएं सभी हैं ब्रदर्स। तो बप ब्रदर्स ब्रk को कहते हैं जैसे हम प्यार के सागर हैं वैसे ही तुमको भी बहुत प्यार से चलना है। देवताएं बहुत प्यारे हैं। कितना उनको प्यार करते हैं। भोग लगाते हैं। अभी तुमको पवित्र बनना है। बड़ी बात तो है नहीं। यह बहुत ही छी छी दुनिया है। हर बात की फिकरात ही रहती है। दुःख पिछाड़ी दुःख ही है। इनको कहा ही जाता है दुःखधाम। पुलिस वा इनकम टैक्स वाले आते हैं कितना हैरान हो जाता है। बात मत पूछो। कोई ने अनाज जास्ती रखा आई पुलिस। मनुष्य पीले हो जाते हैं। यह कैसी डर्टी दुनिया है। नर्क है ना। स्वर्ग को याद भी करते हैं। नर्क के बाद स्वर्ग। स्वर्ग के बाद नर्क यह चक्र फिरता ही रहता है। बच्चे जानते हैं अभी बाप आये हैं स्वर्ग बनाने। नर्कवासी से स्वर्ग वासी बनाते हैं। वहां विकार होता नहीं। क्योंकि रावण नहीं है। वह है ही सम्पूर्ण निर्विकारी। वह है शिवालय यह है वेश्यालय। अभी थोड़ा ठहरो सब को मालूम पड़ जावेगा इस दुनिया में सुख है वा दुःख। थोड़े ही अर्थक्वेक आद होती हैं तो फिर मनुष्यों की क्या हालत हो जाती है। सतयुग में फिकरात की जरा भी बात ही नहीं। यहां तो फिकरात ही बहुत है। बच्चा बिमार हुआ फिकरात। मरा फिकरात। फिकरात ही फिकरात है। फिक्र से फारग स्वामी... सब का स्वामी तो एक ही है ना। तुम शिव बाबा के आगे बैठे हो। यह ब्रहमा कोई गुरु नहीं। यह तो भाग्यशाली रथ है। बाप इस भागीरथ द्वारा तुमको पढ़ाते हैं। वे ज्ञान का सागर हैं। तुमको भी सारी नालेज मिली है। ऐसा कोई नहीं जिसको तुम नहीं जानते हो। सच्च और झूठ की परख तुमको है। दुनिया में कोई भी नहीं जानते। सब हैं अंधे के औलाद अंधे। सच्च खन्ड था। अभी है झूठ खन्ड। यह किसको भी पता नहीं सच्चखन्ड और झूठखन्ड किसने और कब स्थापन किया। यह है अज्ञान की अंधियारा रात। बाप आकर रोशनी देते हैं। गाते भी हैं तुमरी गत मत तुम्ही जानो। ऊंच ते ऊंच वह एक ही है। बाकी सारी है रचना। वह है रचता बेहद का बाप। वह हद के बाप दो-चार बच्चों को ही रचते हैं। बच्चा न हुआ तो फिकरात हो जाती है। वहां तो ऐसी बात नहीं रहती। आयुष्वान, धनवान भव तुम रहते हो। तुम कोई आशीर्वाद नहीं देते हो। यह तो पढ़ाई है ना। तुम हो टीचर्स। तुम तो सिर्फ कहते हो शिव बाबा को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। यह भी टीचिंग हुई ना। इसको कहा जाता सहज योग वा सहज ज्ञान। आत्मा अविनाशी है। शरीर विनाशी है। बाप कहते हैं मैं भी अविनाशी हूं। तुम मुझे बुलाते हो कि पतितों को आकर पावन बनाओ। आत्मा ही कहती है ना। पतित आत्मा महान आत्मा कहा जाता है। पवित्रता है तो सुख भी है शान्ति भी है। यह है होलीएस्ट आफ दी होली चर्च। क्रिश्चन की कोई होली चर्च नहीं होती। वहां तो विकारी जाते हैं। यहां विकारी को आने का हुक्म भी नहीं है। एक कहानी भी है ना। इन्द्र सभा में कोई ब्राहमणी छुपा कर ले गई। उनको मालूम पड़ गया तो उनको सराप मिला। पत्थर बन जाओ। यहां सराप आद की कोई बात ही नहीं। यहां तो ज्ञान वर्षा होती है। पतित कोई भी इस होली प्लेस में आ नहीं सकते। एक दिन यह भी होगा। यह हाल भी बहुत बड़ा बन जावेगा। यह होलीएस्ट आफ होली प्लेस है। तुम भी होली बनते हो। मनुष्य समझते हैं विख बिगर सृष्टि कैसे चलेगी। यह कैसे होगा। अपनी ही लालच रहती है। देवताओं के आगे कहते भी हैं आप सर्वगुण सम्पन्न हम पापी नीच हैं। तो स्वर्ग है होलीएस्ट आफ होली। वही फिर 84 जन्म लेते अनहोलीएस्ट ऑफ अनहोली बन जाते हैं। वह है पावन दुनिया यह है पतित दुनिया। बहुत ही छी छी दुनिया है। बच्चा आया तो खुशी मनाते। बिमार हुआ तो मुंह पीला हो जाता है। मर गया तो एकदम चट बन पड़ते हैं। ऐसे भी कोई हो जाते हैं। ऐसे 2 को भी ले आते हैं। बाबा इनका बच्चा मरने से माथा खराब हो गया है। अब इस बाबा क्या करेंगे। ले जाओ साधु सन्त के पास। यह दुःख की दुनिया है ना। अभी बाप सुखधाम ले जाते हैं। तो श्रीमत पर चलना चाहिए ना। लक्षण भी बहुत अच्छी चाहिए। जो करेगा सो पावेगा। दैवी कैरेक्टर भी चाहिए।